मौत और बेमौत

कृहानी

बरसात का मौसम जा चुका था, लेकिन गलती से आसमान पर एक-दो बादल पानी लिए आ धमकते थे और झरझर बरस कर यह जा-वह जा और फुर्र। कभी-कभी तो घर के आंगन में बरसात होती रहती और पिछवाड़े धूप खिली होती थी। बड़ा अजीब यह महीना था। बस बीस पच्चीस दिनों बाद गेहूं और चने की बौनी शुरु होने को थी।

गांव में तो पूरे बरस ही खेती का काम लगा रहता है। बरसात के दो-तीन महीनों में ही किसान थोड़ा बेफिक्र रहता है, वर्ना एक काम से दूसरा जुड़ा हुआ ही है। फिर कुछ दिनों से तो खेती पूरी तरह से बर्बाद हो रही थी। कभी पानी अधिक बरस रहा था और कभी एकदम सूखा- फिर बिजली की कटौती भी इतनी थी कि फसलें सूखी जा रही थीं, लेकिन बिजली के खंभे और तार तो थे किंतु उनमें करंट बिल्कुल नहीं था। किसान भी तो ऐसा ही मरा गड़ा बस खम्बे की भांति खड़ा था परंतु उसके पास कुछ भी शेष नहीं बचा था। ऐसे में गोबरधन के घर हवेली से दो-तीन बार खबर लेकर सेवक आ चुका था कि हवेली में बुलावा है। गोबरधन जानता था कि कोई बेगार होगी जो उससे करवाना होगी। इधर हवेली से छन-छन कर खबरें नीचे टोले तक भी आ रही थीं कि -हवेली की हालत ठीक नहीं है। अब सब ऊपरी ठाठबाट रह गए हैं वर्ना बीस-तीस साल पहले की बात ही कुछ और थी। थानेदार साहब से लेकर नेता सब सीधे हवेली में जाते थे। वहां मुर्गा-दारु और जो उनकी पसंद होती थी सब मिल जाता था। सरकारी अफसर भी धन्य और हवेली के पटेल साहब भी धन्य हो जाते थे।

बेटे गांव छोड़कर शहर पढ़ने चले गए। वहां खर्च बढ़ गया। इधर खेती बर्बाद हो रही थी। हरवाहों को देने के लिए रुपये भी नहीं हो पा रहे थे। खेत की फसल से ही वेतन चुकाया जा रहा था। पिछले तीन-चार बरसों में तो कुछ ऐसी गंदी हवा चल निकली थी कि किसी का थाने में बुलावा होता तो सिपाही आ जाता, पकड़ ले जाता। अब नेता भी हवेली की ओर कम मुंह करते थे। हवेली में नौकरों, सेवकों की संख्या भी कम हो गई थी। पटेल साहब गांव के मुखिया कहलाते थे लेकिन अब वह नाम भी धीमे धीमे खत्म होते जा रहा था। बड़े लोगों के साथ यही मरण है-बेचारे एक बार शेर पर बैठ गए और अगर उतरे तो शेर खा जाए और बैठे रहे तो खुद बिक जाएं। ऐसी ही कुछ हालत पटेल साहब की हो गई थी।

हालांकि मुंछे अभी भी ऊंची ही थी, उनके बगल के रिश्तेदारों से उनकी तनातनी भी किसी से छिपी नहीं थी। उधर अगर किसी प्रकार का धार्मिक आयोजन होता तो इधर उसका उत्तर यह भी देते थे। उधर भागवत पुराण में चार पांच सौ ने भोजन किया तो इधर नर्मदा पुराण बैठा कर पूरे गांव भर को न्यौता दिया जाता था। चाहे वह सब शान शौकत उनकी में हो, चाहे स्वयम् को गिरवी रखकर लेकिन शेर पर जो बैठे हुए हैं। यह तनातनी कुछ ऐसी थी कि कब कोई बड़ा काण्ड हो जाए इसकी आशंका बराबर गांव में बनी रहती थी, फिर हवेली में आग लगेगी तो गांव के झोपड़े तो जलेंगे ही।

सेवक, गोबरधन को खबर कर चुका था। अब रुकना याने परेशानी को न्यौता देना था। हालांकि गोबरधन मात्र दो एकड़ की भूमि का मालिक था। छोटा सा परिवार और अपने में खुश था। थोड़ी बहुत बाजार की उधारी थी सो इतनी थी कि चुका कर नई उधारी वह ले लेता था।

उसकी पत्नी मुनिया बाई उसके प्रत्येक कार्य में भारतीय पत्नी की तरह सम्मिलित रहती थी। गोबरधन को अकेला जाते देख उसने भी कहा कि - 'वह भी हवेली साथ हो ले?' लेकिन गोबरधन नहीं चाहता था कि मुनिया बाई साथ जाए। लेकिन मुनिया बाई ने पति का साथ नहीं छोड़ा और वह हवेली में पहुंच गए।

बड़े दरवाजे से अंदर गए-बाहर के बरामदे में पटेल साहब चिंता मग्न होकर लेटे थे। एक सेवक पांव दबा रहा था। ऊपरी मंजिल पर खाना पकाया जा रहा था जिसकी खुशबू नीचे तक फैली हुई थी। पटेल साहब ने गोबरधन को आते हुए देखा तो थोड़े उकड़ू होकर बैठ गए-'क्यों रे गोबर कैसा है?'

'मालिक ठीक हूं- कैसे याद किया?' गोबरधन ने कहा। मुनिया ने भी घूंघट मुंह पर ले लिया और इज्जत से नीचे बैठ गई।

'और खेती कैसी चल रही है?'

'ठीक ही है मालिक।'

'हां -समय खराब आ गया है- हमें भी बहुत घाटा हो गया है-' पटेल साहब अपनी बात भी पूरी नहीं कर पाए थे कि एक सेविका दो ग्लास में मही (छाछ) ले आई। ये ग्लास कागज के बने हुए थे जिसका आजकल चलन शुरु हो गया है। वर्ना छोटी जाति के लिए तो बड़े दरवाजे के आले में कप और ग्लास दोनों रखे होते थे। दोनों ने छाछ के ग्लास को चुपचाप ले लिया।

'तेरी जमीन कितनी है?'

'सवा दो एकड़ है मालिक' गोबरधन ने कह तो दिया लेकिन मन धबरा गया, कहीं बेचने की न कह दें।

'गोबरधन देख-तेरे बाप-दादाओं से हमारे रिश्ते रहे थे-' कुछ देर पटेल साहब चुप हो गए, उन्होंने गहरी नजर से घूंघट के पीछे चेहरे के भावों को पढ़ने की कोशिश की फिर कहना शुरु किया-'तुझे मालूम है मेरी तीन कन्याएं हैं, दो की शादी हो गई है, एक कन्या का ब्याह करना है-' वह कहते-कहते चुप हो गए। मुनिया बाई सोच रही थी आखिर यह बात कहकर हमसे क्या चाहते हैं? कन्या का ब्याह तो सौ तीरथ करने के बराबर है। पटेल साहब ने कहा-'गोबरधन एक छोटा सा काम था?'

गोबरधन का दिल धड़का। थूक निगलते हुए उसने कहा- 'कहिए मालिक।'

'कन्या के ब्याह के लाने पचास हजार रुपयों की जरूरत है।'

गोबरधन ने सुना तो माथा पकड़ लिया। वह क्या करे? कहां से लाए पचास हजार? उसके बोल गले में ही धंस कर रह गए थे।

'मैं जानता हूं पगले-तेरे पास भला इतनी लंबी रकम कहां से होगी?'

'जी-जी मालिक' गोबरधन ने बड़े पटेल की हां में हां मिलाई।

'पगले हमें मालूम था इसलिए तो एक व्यवस्था की है-बैंक में बड़े साहब हमरे पुराने दोस्त है, वह जमीन।'

'गिरवी रखना है मालिक?' गोबरधन की आवाज में घबराहट थी।

'नहीं रे पगले' पूरे स्नेह से पटेल साहब ने कहा।

'फिर मालिक?'

'बैंक से क्रेडिट कार्ड बनवा लेते हैं, पचास हजार मिल जाएंगे, अगली फसल पर हम चुका देंगे।

'कैसे?'

'अरे पगले सरकार 3-4 प्रतिशत पर उधार देती है, ब्याज भी हम ही चुकाएंगे-कन्या के ब्याह की बात है-क्यों बहूं क्या कहती हो-?' पटेल साहब ने मुनिया बाई की ओर अपनी बात को फैंकते हुए कहा।

'जी-जी-मालिक' घूंघट में से घबराई आवज आई थी।

'तू तेरी बही लेते आना, मैं सब कागज तैयार करवा दूंगा-बैंक चलेंगे-बस एक दिन में सब हो जाएगा-वो आखिर कन्या है उसका ब्याह हो जाए तो गंगा स्नान हो गया समझो-हां तो तुम बही भिजवा दो-एक दो दिनों में हम कर्जा लेकर बैंक की उधारी चने, गेहूं की फसल पर चुका देंगे।'

'जी मालिक-' लाख चाहने पर भी गोबरधन के मुंह 'ना' नहीं निकला।

'चलो अच्छा हुआ बैंक का क्रेडिट कार्ड पर सब हो जाएगा, ब्याज भी कम और जमीन सुरक्षित रहेगी।' तो उठकर जरा बही भिजवा दे।

'जी मालिक' दोनों जाने को उठे। कागज के ग्लास को हाथों में उठाया और आंगन से बाहर निकलने वाले थे तो बड़ी मालकिन ऊपर से दिखाई दी। वह भी बहुत दुबली हो गई थीं।

कन्या के ब्याह के काजे पटेल साहब ने रुपयों की कही है। यह तो पुण्य की बात है। हम गरीब-छोटों से भी मदद की उम्मीद उन्हें है, यह तो हमारे लिए सम्मान की बात है। सेवक उनके साथ हो लिया। गोबरधन ने बही निकाल कर दे दी। मुनिया बाई ने पति को सांत्वना देते हुए कहा-'चिंता मत करो, कन्या का ब्याह है, हमारी भी दो कन्याएं है-बड़े मालिक दे देंगे।'

अगले दो-तीन दिनों बाद फिर एक खबर आई और गोबरधन बैंक गया, अंगूठा लगाकर पचास हजार गिनकर ले लिए, गेट के बाहर पटेल साहब ने वह ले लिए थे। गोबरधन को चाय, नाश्ता करवा दिया गया था। गोबरधन की बड़ी इच्छा थी एक पौआ पीने की सो वह उसने पटेल साहब से अलग होकर पी लिया और रात गए गांव में पहुंचा।

सुबह नींद भी नहीं खुली कि गांव में पुलिस की गाड़ियों के हो-हो-हो-हार्न से उसकी नींद खुल गई। बाहर निकला तो पूरे गांव में भगदड़ मची थी-सब भाग रहे थे, छिप रहे थे। आखिर मामला क्या है? उसने जानने की कोशिश की लेकिन कुछ पता नहीं चल पा रहा था। वह थोड़ा आगे बढ़ा तो लछिया नाई लुकते छिपते भाग रहा था।

'क्यों कक्का क्या हुआ?' गोबरधन ने उसको घबराए देखा तो पूछा। उसने गोबरधन का घर खुला देखा तो सीधे घर में घुस गया। सांसों को काबू में करके कह उठा-'गोबरधन भैया गजब हो गया।'

'का हो गओ?'

'मर्डर'

'मर्डर-कौन को?' गोबरधन का रात पौआ का नशा पूरा उतर गया था। मुनिया भी एक ओर खड़ी होकर बातें सुन रही थी। 'बड़े मालिक और उनके दो नौकरों का-' लछिया ने भयभीत नेत्रों से इधर-उधर देखकर कहा- 'खून ही खून चारों ओर था-वहां नहर के पास सड़क पर काट दिया जालिमों ने। 'कौन ने कक्का?' गोबरधन ने पूछा। 'बगल के रिश्तेदारों ने-वो तो पुरानी तनातनी चल रही थी, कल सुना कन्या के ब्याह काजे सोना खरीद कर ला रहे थे, वो तो ताक ही रहे थे-मौका मिला तो लूट कर खत्म कर दिया-' लछिया काका ने पुनः कहा- 'भैया हमने तुम्हें बताया सो किसी से मत कहना-' कहकर लछिया छिपकर पतली गली से निकल गया। पूरे गांव में सन्नाटा पसर गया था। पुलिस की गश्त शुरु हो गई थी। सब डरे सहमे हुए थे। बड़े पटेल के बेटे शहर से आ गए थे। शाम तक दाह संस्कार हुआ। गोबरधन भी उनकी मिट्टी में गया था। चारों ओर अजीब सा सन्नाटा था। एक साथ तीन हत्याएं-ऐसा कभी भी गांव में नहीं हुआ था, इसलिए चारों ओर दहशत का वातावरण था। पूरे एक सप्ताह तक पुलिस बनी रही। ना जाने कहां से बड़े-बड़े लोग मिलने आते रहे। एक रात मुनिया बाई ने पति से कहा-'सुनो जी-हमारे पचास हजार उधारी का क्या होगा?'

'पगली वो जान से गए, हम ऐसी बात उनसे कैसे कर सकते हैं?'

'उनसे नहीं, मैं तुमसे पूछ रही हूं। 'देख समय आयेगा तो चल कर मालकिन से पूछ लेंगे, वह ईमानदार है-' गोबरधन ने स्वयम् को आश्वस्त करते हुए कहा।

दस-बीस दिनों बाद एक दोपहर पति-पत्नी दोनों हवेली में गए। बरामदे में वह दीवान खाली पड़ा था जिस पर बड़े मालिक बैठे रहते थे। पूरी हवेली में सन्नाटा छाया हुआ था। उन्होंने इधर-उधर देखा, एक सेविका प्रकट हुई, वह वहीं दीवान के पास नीचे बैठ गए। तब ही अंदर से बड़ी मालकिन प्रकट हुईं, बहुत उदास, बिना श्रृंगार के। आकर दीवान के पैताने बैठ गईं। प्रश्न भरी नजरों से वह गोबरधन और पत्नी को देखने लगीं। थोड़ी देर बाद गोबरधन ने कहा-'मालकिन हमें बहुत सदमा पहुंचा।'

'हूं' हुंकार भर कर मालकिन ने साड़ी के पल्लू से आंसू को पोंछ लिया।

मुनिया किसी स्त्री का दर्द समझ सकती थी, उसने दुखी स्वर में कहा- 'मालकिन कन्या के ब्याह का क्या होगा?''वह तो तय कर गए हैं, सो तो होगा ही' बड़ी मालकिन ने कहा।

'मालकिन बुरा न लगे तो एक बात कहें?'

'कैसी बात?' बड़ी मालकिन ने पूछा।

'बड़ी मालकिन-हमसे मालिक पचास हजार रुपए उधार लिए हुए थे?'

'तुम से उधार?'

'हां मालकिन हम झूठ नहीं कह रहे हैं-बैंक से क्रेडिट कार्ड बनवाकर कन्या ब्याह के लिए पूरे पचास हजार उनकी मौत के एक दिन पहले लिए रहे-हम गंगा जल की सौगंध खाकर कह रहे हैं-' गोबरधन के स्वर की सच्चाई बातों से प्रकट हो रही थी। बड़ी मालकिन ने कहा-'गोबरधन हमें नहीं मालूम लिये रहे कि नहीं-लेकिन तू जो कह रहा है तो हम भरोसा किए हैं, हम लौटा देंगे लेकिन अभी तो हमारे पास भी नहीं हैं-' बड़ी मालकिन ने कहा। पति पत्नी ने सुना तो उन्हें इस बात की तसल्ली हो गई कि बड़ी मालकिन ने रुपये देने की बात स्वीकार तो कर ली, यदि मना कर देती तो क्या कर लेते? वह लौट आए। दो-तीन महिनों के अंतराल से बड़े पटेल की बेटी का ब्याह हो गया। कन्या की विदाई हो गई। एक दोपहर बैंक का चपरासी नोटिस लेकर आ पहुंचा। फसलें आ जाने के बाद भी रुपये जमा नहीं हुए थे। पुनः मुनिया बाई और गोबरधन बैंक का नोटिस लेकर हवेली में पहुंचे और बड़ी मालकिन को नोटिस थमा दिया। बड़ी मालकिन ने नोटिस देखा, कागज को उल्टा-पल्टा और कह उठी-'गोबरधन भैया तुम्हारा बड़ा एहसान रहा, उनकी तो हत्या हो गई लेकिन हमारी तो मौत हो गई। वह क्या गए पूरा जीवन परेशानी में डूब गया।' कहकर वह रोने लगीं, फिर कह उठी-'तुम व्यवस्था कर लो, अभी तो हमसे कोई व्यवस्था नहीं हो पायेगी, फिर हमें उन्होंने कुछ भी नहीं बताया था, फिर भी हम आवक होने पर देने की कोशिश करेंगे-' कहकर मुंह में पल्ला लगाकर वह अंदर चली गई। हवेली का पूरा सन्नाटा मानों उन दोनों को खाने को दौड़ रहा था। मुनिया बाई ने पति का चेहरा देखा-वह हहरा पीला, कमजोर प्रतीत हो रहा था। लग रहा था सवा दो एकड़ जमीन बैंक नीलाम कर देगी लेकिन वह पचास हजार ब्याज सहित कहां से लायेंगे?

कन्या के ब्याह सौ तीरथों के बराबर होता है- कहावत पर वह मन ही मन माथा कूटने लगी थी। गोबरधन ने कहा-'मुनिया बड़े मालिक की हत्या हो गई, मालकिन कहे कि कनकी मानों मौत हो गई-अरे अरे हम तो बेमौत मारे गए-हमारा तो कुछ भी लेना देना नहीं था-हमें किस पाप की सजा मिली है? बेमौत मौत की सजा हम भुगत रहे हैं-' कहकर वह वहीं जमीन पर माथा दे कर जोरों से रो पड़ा।पूरी हवेली में गोबरधन के रोने की आवाज गूंज रही थी। पर उसकी आवाज हवेली में दबकर रह गई थी।

- डा. गोपाल नारायण आवटे

मन

मानसिक बल को खोना नहीं,
बेमतलब से सोना नहीं
+ + +
इस बल को तू निर्बल मत कर,
सदा सबल रख रोना नहीं
+ + +
शक्तिशाली मन हो स्थिर,
जंजालों को ढोना नहीं
+ + +
मन ही देवता मन देवालय,
मन कोई जादू टोना नहीं
+ + +
मन ही देवता मन देवालय,
मन कोई जादू-टोना नही
+ + +
स्वस्थ निरोग हो काया सुंदर,
मन अनुरुप को खोना नहीं,
+ + +
सद्विचार सत कार्य हो मन में,
विष- विचार कभी बोना नही,
+ + +
मन से मानसिक बल ही सबल है,
चंचल-मनमय होना नही
+ + +
मन से ही आनंद आत्म-सुख,
मन कोई पत्तल दोना नहीं,
+ + +
कल्पवृक्ष मन माधव-साधव,
कामधेनु मन गौना नही
+ + +
सारी सिध्दियां मन से उपजन,
चंचल मन को पिरोना नही,

आतंकवाद

भारत ऐसा देश हो जाए,
आतंकवाद को जड़ से कचाड़ दे,
+ + +
हो बंगाल बिहार या उत्कल,
आतंकवाद को जड़ से उजाड़ दे
+ + +
झारखंड जशपुर बस्तर में,
आतंकवाद को जड़ से पछाड़ दे
+ + +
तेलगना आंध्र के माईड में,
आतंकवाद को जड़ से लताड़ दे
+ + +
जहां जहां आतंकी हुद-हुद,
आतंकवाद को जड़ से दहाड़ दे
+ + +
रेस्क्यू रेस्क्यू रेस्क्यू आपरेशन,
आतंकवाद को जड़ से उखाड़ दें

- जोगेन्द्र महापात्र 'जोगी' जगदलपुर

सोते रहिये जनाबे आली

दुआ लात तानकर सोते रहिये जनाबे आली ! आप सोते रहेंगे तभी तो हम इस देश को फिर से बर्बादी के कगार पर पहुंचाएंगे। दूसरों को बर्बाद करके अपने को आबाद करने में क्या आत्मिक खुशी है, यह हमसे पूछिए।

लोग कहते हैं कि कल तक हम झोपड़ी छाप थे। पिता भैंस,बकरियां चराते थे। सुबह उपवास तो शाम को ले-देकर एकाध मुट्ठी रुखी-सूखी का प्रबंध हो पाता था। हमने किसी के मुंह से सुना कि राजनीति पारस-पत्थर है। हम सब अपनी लोहा तकदीर लेकर जय लोहिया, जय लोहिया का पारस नारा मारते हुए राजनीति के कुरुक्षेत्र में कूद पड़े और देखिये, आज हमारा सारा लोहा सोने के ढेर में परिवर्तित हो चुका है। आज क्या नहीं है हमारे पास ? माल, बंगले, फार्म हाउस, बैंक-बैलेंस, जमीन- जायदाद। उधर देश में झोपड़पट्टियों की संख्या बढ़ती गई, इधर हमारा बैंक बैलेंस उसी अनुपात में उछाल मारता गया।

ऐसा नहीं है कि हम अकेले हैं,हमारे और भी दूसरे चचेरे,ममेरे सगे भाई-बंद हैं। सुना है उनके चरवाहे बाप को गांधी का उच्च क्वालिटी वाला पारस पत्थर मिला। वे चतुर सुजान भी अपना लोहाट तकदीर लेकर गांधी-गांधी भजते हुए राजनीति के कुरुक्षेत्र में कूद पड़े।आज गांधी-पारस के स्पर्श से वे सब अपनी करोड़िया अमीरी और देश की फटेहाल गरीबी बढ़ाने में प्राण-प्रण से लगे हुए हैं।

आप कुंभकर्ण जैसे यों ही खर्राटे मारते सोते रहेंगे, तभी तो हम देश के विकास रुपी इस हड्डे-भुखे-प्यासे बैल को यों तान-तानकर चाबुक मारते रहेंगे, ताकि वह जान लगाकर बुलेट ट्रेन की स्पीड से आगे भागता रहे। सोते हुए आप बहुत खूबसूरत लगते हैं। सो-सोकर आप सब अपनी सेहत और खूबसूरती खुशी-खुशी यों ही बढ़ाते रहिये।हम इधर देश का डिनर-लंच करके अपने बैंक-बैलेंस को यों ही खुशी-खुशी बढ़ाते रहेंगे।

जागिये मत, ज्यादा जागने से अनिद्रा की बीमारी हो जाती है। हमारा विकास देखकर जलन और चिंता की भावना पैदा होगी। ईर्ष्या से ब्लड-प्रेशर बढ़ेगा, हार्ट-अटैक से बेमौत मारे जावोगे। अकाल मृत्यु से भूत की योनि में जावोगे। खुद तंग रहोगे, दूसरों को तंग करोगे। अर्जुन ने निद्रा पर विजय पा ली थी। वे महीनों जागते रहते थे। वही हाल लक्ष्मण का था वे भी वनवास-काल में सोते न थे,बस जागते रहते थे। परिणाम यह हुआ कि एक को महाभारत झेलना पड़ा और दूसरे को शक्तिबाण की जानलेवा चोट खानी पड़ी।

सोते रहोगे तो अच्छे - अच्छे, मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे सपने दिखाई देंगे,मन प्रसन्न रहेगा,स्वस्थ रहोगे। जागते रहोगे तो वही महाभयानक महंगाई, भ्रष्टाचार, आतंकवाद की रोज डरावनी कहानियां सुनने-देखने को मिलेंगी। मन दिन-रात डरा सहमा रहेगा इसलिए जाग रहे हो तो तुरंत सो जाओ,सुकून मिलेगा। हम हैं न लोहियावादी और गांधीवादी जागते रहने के लिए। कोई वादा नहीं हम अपने बाल-बच्चों और खानदान के साथ सब ठीक कर देंगे।

तुम सोते रहे तो अंग्रेज आये और सौ सालों तक तुम्हारी खोपड़ी के तबले पर बैठ, ताल ठोक-ठोककर कर इस देश का शासन चलाते रहे। राजकाज के प्रपंच से तुमको छुट्टी दे दी। बदले में तुम्हारा थोड़ा-बहुत सोना,चांदी, हीरा-मोती उठाकर ले गए। सोने की चिड़िया से जंग लगी टीन की चिड़िया बना दिया। तुमने जागने की कोशिश की तो जी भरकर बंदूक,बंदूक के कुंदे और अपने लोहे के नाल वाले नुकीले बूटों से धुनकते-रौंदते रहे। चाहे जो भी हो, वे तुम्हारे लिए ट्रेन, हवाई-जहाज, बस-कार, रेडियो-फोन और बड़ी-बड़ी बिल्डिंग, बाँध का प्रबंध करके गए कि नहीं ? उनके लात-जूते को भूल,उपकार मानना सीखो कृतघ्नों !

भगवान् विष्णु शेष-शैय्या पर सोते हैं,ब्रह्मा जी पद्म-नाभ पर उंघते रहते हैं और शिव जी व्याघ्र-चर्म पर पालथी मारे योग-निद्रा में मस्त रहते हैं तो तुम भी सोना छोड़कर अकेले क्यों परेशान हो रहे हो ? तुम्हारे सारे देवता देवसुतनी के महीनों में खर्राटे मारकर सोते रहते हैं। सो तुम भी चादर ओढ़, लम्बी तानकर सो जाओ। ईश्वर करे,तुम्हारे जीवन में देवउठनी कभी न आये। मैंने कहा न बाकी हम सब सम्हाल लेंगे। विश्वास नहीं है क्या ?

- कस्तूरी दिनेश

घर में खुशहाली कैसे आये!

- सबसे पहले हमको अपने आप को समय के अनुसार बदलना होगा।
- क्रोध आने पर नियंत्रण में रहें। किसी के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें, जिससे उसके मन को चोट पहुंचे।
- बीती बातों को भुला देना ही बेहतर है। उन्हें दिल से न लगाए रखें।
- अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए संयमित व पौष्टिक आहार लें।
- सकारात्मक सोच अपनाना सीखें। नकारात्मक सोच कई बीमारियों व झगड़ों की जड़ है अतः हर हालत में अपनी सोच को सकारात्मक ही रखें।
- हम भगवान के अंश हैं, हमको जो हो रहा है, भगवान की लीला है। यह समझकर दुखी नहीं होना चाहिए। उसका प्रेम से उत्तम विचार से समाधान करना चाहिए।
- हमको दिखावा नहीं करना चाहिए। जितना भगवान ने हमको दिया है, उसको धन्यवाद देते हुए मेहनत करने का प्रयत्न करना चाहिए।
- किसी को गाली देना और बुरा बोलना महापाप है, इससे विवेक समाप्त हो जाता है।

- देवीशरण वैश्य

सुनन्दा भाभी

चल रहो हो न!

कहां?

भूल गये। आज सुनन्दा भाभी की तेरहवीं है।

सोचूंगा।

भला इसमें सोचना क्या है।

अरे भाई, शवयात्रा में तो मैं शरीक था ही। ये पगड़ी रस्म, मृत्युभोज तो अब खोखली औपचारिकताएं हैं। इन सबमें मेरी कोई रुचि नहीं है।

ये भी कोई बात हुई। लोग क्या कहेंगे?

लोगों की मुझे परवाह नहीं है। और भाभी ने ही कौन हमारे साथ सौजन्यता का व्यवहार किया था। अपनी दौलत के घमण्ड में सदैव हमें नीचा दिखाने का ही प्रयास किया। हमें हर बार दुख पहुंचाकर वह अजीब सी तृप्ति महसूस करती रहीं। वह हमको ऐसे मिलती थी, मानो हमें दया की भीख दे रही हों। हददर्जे की घमण्डी औरत, जिसने भाई का भी मोह हमसे तुड़वा दिया था।

ये कहां गड़े मुर्दे उखाड़ने बैठ गये तुम। वैसे भाभी ने मेरे साथ भी कौन सा अच्छा व्यवहार किया। सदैव लड़ती-झगड़ती, चुगली खाती रही। एक बार तो उसने मुझे तुमसे अलग ही करवा दिया था। भला हो मुन्ने का, जो उस वक्त पेट में था, मैं बच गई किंतु उनकी सच्चाई बुराई उनके साथ। मरे व्यक्ति के साथ कैसा बैर कैसा दुराव। अब तुम्हें अपने भाई-भतीजों की ओर देखना है।मैं खून, खून के बीच दीवार नहीं बनना चाहती। अब चलो जल्दी तैयार हो लो।

रेखा औरत ही आदमी की जिंदगी में स्वर्ग लाती है और और वही नर्क। ईश्वर जाने तुम मेरे किस जन्म का पुण्य हो। अपने विरोधी के प्रति भी ऐसी कोमल भावना। मैं तो तुम्हारे सामने बौना लगने लगा हूं।

अच्छा अब जल्दी भी करो। बस का समय हो रहाहै। हां, इतनाअवश्य कहना चाहूंगी कि स्त्री-पुरुष के बगैर अपूर्ण है। सरिता चाहे जितनी दूर से बहकर आये, सागर की गोद में ही उसकी संपूर्णता है। काश भाभी को भी स्त्री की यह परिभाषा याद होती।

- आनन्द बिल्थरे

पर्यावरण के प्राण पंचतत्वों पर आधारित महाकाव्य

ममोला

रचनाकार- शान्ती तिवारी, जगदलपुर

प्रकृति

गुण तेरे अविकल ग्रहण करें, हमको यह सुंदर सा वर दो।
बन धरा भार सबका वहती, तू सतत शक्ति का स्रोत अमर।
सलिला की धार अमल अविरत, नत पयस्विनी तू मां संवर।
अवगुण सारे जग जहां रहे, शिव पावक बनकर नष्ट करें।
जगती पर सतत अलख रह तू, बन पवन नित्य उपकार करे।
चहुं दिशि अछोर है नीलाम्बर, बन अंबर सुंदर छत्र दिया।
मानव का मान दिया हमको, मेघा का वर उपहार दिया।
गिरि गर नदका पशु पक्षी, बने कुटुम्ब हिय भाव भर दो।
अंत काल तक मानव मन हो, जननी मां यह सुन्दर वर दो।

समाप्त